मलयाळम माध्यम
डिप्लोमा पाठ्यक्रम

© C.H.D. Govt. of India KIT-10	**पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग** ഡിപ്പാർട്ട്മെൻറ് ഓഫ് കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സസ് **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ്	पाठ പാഠം } 19&20

हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम

ഹിന്ദി ഡിപ്ളോമ കോഴ്സ്

पाठ/പാഠം-19

ഉള്ളടക്കം

1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

യൂണിറ്റ്—1

2.0 പാഠഭാഗത്തിലേക്ക് ഒരു എത്തിനോട്ടം
3.0 പാഠം 'सौर ऊर्जा'
4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ
5.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

യൂണിറ്റ് —2

6.0 സംക്ഷേപണത്തെക്കുറിച്ച്
7.0 സംക്ഷേപണത്തിനുള്ള ഖണ്ഡിക -1
8.0 സംക്ഷേപണത്തിനുള്ള ഖണ്ഡിക -2

1—74 CH Dte/2013

1.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

പൊതു താല്പര്യമുള്ള ശാസ്ത്ര സംബന്ധമായ ഒരു ഉപന്യാസമാണ് ഒന്നാം യൂണിറ്റിൽ ഉൾപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നത്. ഒരു ഖണ്ഡികയുടെ സംക്ഷേപണം എങ്ങനെ തയ്യാറാക്കാം എന്ന കാര്യമാണ് രണ്ടാമത്തെ യൂണിറ്റിൽ വിവരിച്ചിട്ടുള്ളത്.

യൂണിറ്റ് —I

2.0 പാഠഭാഗത്തിലേയ്ക്ക് ഒരു എത്തിനോട്ടം

ഇത് സൗരോർജ്ജത്തെക്കുറിച്ചുള്ള ഒരു പാഠമാണ് പരമ്പരാഗതമായ ഊർജ്ജസ്രോതസ്സുകൾ പ്രശ്നമായിരിക്കുന്ന ഇന്ന് സൂര്യൻ നമ്മുടെ ആശാകേന്ദ്രമാണ്. നമ്മുടെ രാജ്യം ഇന്ന് സൗരോർജ്ജത്തെ പ്രയോജനപ്പെടുത്താൻ പരിശ്രമിച്ചു വരുന്നു. സൗരോർജ്ജ സങ്കൽപ്പത്തേയും പ്രയോജനത്തെയും കുറിച്ച് കൂടുതൽ അറിയാൻ ഈ ഉപന്യാസം ഉപകരിക്കും.

3.0 പാഠം

सौर उर्जा

पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(1)

1. संसार के प्राणियों के जीवन और दैनिक कार्यों के लिए ऊर्जा परम आवश्यक है। पेड़-पौधे, सूर्य से ऊर्जा ग्रहण करते हैं। सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को सौर ऊर्जा कहते हैं। समस्त प्राणी अपने जीवन-यापन के लिए प्रकृति पर निर्भर हैं और उसके विभिन्न स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। ऊर्जा के बिना न तो जीवन संभव है और न ही कोई कार्य हो सकता है। इसलिए मानव प्राचीन युग से लेकर आज तक ऊर्जा के नए-नए स्रोतों को खोजता रहता है।

2. ऊर्जा जिन साधनों से प्राप्त होती रही है, उन्हें हम ऊर्जा-प्राप्ति के पारंपरिक स्रोत कहते हैं। ये स्रोत हैं—लकड़ी, कोयला, पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि। वायु और जल का

भी ऊर्जा के स्रोत के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। आधुनिक युग में विज्ञान ने ऊर्जा के और भी नए स्रोत खोज निकाले हैं। जिन्हें आजकल गैर-पारंपरिक स्रोत कहा जाता है। इनके अनेक रूपों से हम परिचित हैं—ईंधनवाली ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा, गैस ऊर्जा, सौर ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, ज्वार ऊर्जा आदि।

3. पारंपरिक स्रोतों से निकलने वाली ऊर्जा की कमी के कारण गैर-पारंपरिक स्रोतों की खोज का काम आज बड़ी तेजी से किया जा रहा है। भारत दुनिया का पहला देश है जिसने सन् 1950 से ही सौर ऊर्जा का प्रयोग आरंभ किया। सन् 1973 में जब पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि पदार्थों का संकट अनेक देशों ने अनुभव किया, तब वैज्ञानिकों ने व्यावहारिक स्तर पर सूर्य को ऊर्जा का प्रमुख स्रोत के रूप में स्वीकार किया। भारत सरकार के गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत विभाग ने एक व्यापक कार्यक्रम बनाया है। वह राज्यों के ऊर्जा विभागों की सहायता से इन कार्यक्रमों और साधनों को अधिक लोकप्रिय बनाने का प्रयास कर रहा है।

4. ऊर्जा कार्यक्रमों के अंतर्गत गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के संयंत्रों के निर्माण और उनके रखरखाव और प्रचार आदि पर बल दिया जाता है। इनके अनुसंधान तथा विकास के लिए उच्चतम तकनीकी ज्ञान तथा प्रशिक्षण को भी बढ़ावा दिया जाता है।

5. सौर ऊर्जा हमारे अनेक कामों में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। सौर ऊर्जा से बिजली भी पैदा की जाती है जिससे घरों में और सड़कों पर प्रकाश किया जाता है। सौर ऊर्जा से कुकर (सौर पाचक), सोलर-हीटर (सौर तापक) सोलर-ड्रायर (सौर सूखक), सोलर रेफ्रिजरेटर (सौर प्रशीतक) इत्यादि का विकास राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशालाओं में हो रहा है। सोलर-कुकर संदूक के आकार का होता है जो धूपवाले दिनों में दो-ढाई घंटे में दाल चावल आदि पका सकता है। माँस, मछली आदि को भी इसमें पकाया जा सकता है। सोलर हीटर सार्वजनिक स्थानों जैसे अस्पतालों, होटल, कारखाने आदि में पानी गरम करने के लिए काम में लाए जाते हैं। सोलर ड्रायर की सहायता से अनाज, तंबाकू, नारियल, इमारती लकड़ी आदि को सुखाया जाता है।

अब तो ऐसे सौर संयंत्रों का विकास किया जा रहा है जिनसे समुद्र जल के खारेपन को दूर किया जा सकता है। सौर ऊर्जा से हमारे दूर दराज के गाँव भी अब प्रकाश से

जगमगा उठेंगे और गाँव भी शहरों की तरह सभी आधुनिक साधनों से संपन्न हो जाएँगे।

6. हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में सौर ऊर्जा लगभग बारहों महीने सुलभ है। हमें चाहिए कि हम सौर ऊर्जा का भरपूर लाभ उठाएँ। इससे न केवल पारंपरिक ऊर्जा की बचत होगी, पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल आदि के लिए विदेशों का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा, बल्कि विदेशी मुद्रा में भी ज्यादा बचत हो सकेगी। निस्संदेह सौर ऊर्जा की क्राँति से जन साधारण को लाभ मिलेगा और देश चहुँमुखी विकास का अपना स्वप्न साकार कर सकेगा।

4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

ഖണ്ഡിക—1

सौर ऊर्जा	സൗരോർജ്ജം
प्राणी	ജീവി
दैनिक काम	ദൈനംദിന പ്രവർത്തനം
जीवन-यापन	ഉപജീവനം
निर्भर होना	ആശ്രയിക്കുക
स्रोत	ഉറവിടം
युग	യുഗം, കാലം
संभव होना	സാധ്യമാവുക
खोजना	അന്വേഷിക്കുക

ഖണ്ഡിക—2

प्रमुख	പ്രധാനമായ
साधन	ഉപകരണങ്ങൾ, സാധനങ്ങൾ
पारंपरिक	പരമ്പരാഗതമായ
रूप	രൂപം
ईंधन	ഇന്ധനം
परिचित है	അഭിജ്ഞരാണ്
कोयला	കൽക്കരി
गैर-पारंपरिक	പാരമ്പര്യേത
आधुनिक	നവീനം
परमाणु	പരമാണു
भूतापीय	ഭൂതാപംകൊണ്ടുള്ള
उत्पन्न होना	ഉണ്ടാവുക
ज्ञात होना	അറിയപ്പെടുക
ज्वार	വേലിയേറ്റം
मिट्टी का तेल	മണ്ണെണ്ണ

ഖണ്ഡിക—3

खोज	അന്വേഷണം, കണ്ടുപിടുത്തം
संकट	പ്രതിസന്ധി
अनुभव करना	അനുഭവിക്കുക
व्यावहारिक स्तर	പ്രായോഗികതലം
व्यापक	വ്യാപകമായ
प्रयास	പരിശ്രമം
लोकप्रिय	ജനപ്രീതിയുള്ള
कार्यक्रम	കാര്യപരിപാടി

ഖണ്ഡിക—4

संयंत्र	ഉപകരണ സജ്ജിതമായ ഫാക്ടറി
रखरखाव	പരീക്ഷണം
(पर) बल देना	ഊന്നൽ നൽകുക
अनुसंधान	ഗവേഷണം
बल देना	ഊന്നിപ്പറയുക
विकास	വികസനം
उच्चतम	ഏറ്റവും മികച്ച
तकनीकी	സാങ്കേതികപരമായ
प्रशिक्षण	പരിശീലനം
बढ़ावा देना	പ്രോത്സാഹിപ്പിക്കുക

ഖണ്ഡിക—5

सिद्ध होना	തെളിയിക്കപ്പെടുക
राष्ट्रीय	ദേശീയം
भौतिक प्रयोगशाला	ഫിസിക്കൽ ലാബോറട്ടറി
इमारती लकड़ी	കെട്ടിട നിർമ്മാണത്തിനുള്ള തടി
सुखाना	ഉണക്കുക
संदूक	പെട്ടി
पकाना	പാകം ചെയ്യുക
सार्वजनिक स्थान	പൊതുസ്ഥലം
कारखाना	ഫാക്ടറി
काम में लाना	ഉപയോഗപ്പെടുത്തുക
सहायता	സഹായം
अनाज	ധാന്യം
तंबाकू	പുകയില
नारियल	നാളികേരം
खारापन	ഉപ്പുരസം
जगमगाना	മിന്നിത്തിളങ്ങുക
आधुनिक साधनों से	നവീന ഉപകരണങ്ങൾ കൊണ്ട്
संपन्न होना	സുസജ്ജിതമാക്കുക

ഖണ്ഡിക—6

सौभाग्यशाली	ഭാഗ്യശാലി	सुलभ	സുലഭം
बचत	മിച്ചം	क्रांति	വിപ്ലവം
चहुँमुखी	നാനാമുഖമായ	मुँह ताकना	ആശ്രയിക്കുക
स्वप्न साकार करना	സ്വപ്നം സാക്ഷാത്കരിക്കുക.	विदेशी मुद्रा	വിദേശ നാണ്യം

5.0 പാഠഭാഗം വായിച്ച് ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക.

(1) सौर ऊर्जा किसे कहते हैं ?

सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को सौर ऊर्जा कहते हैं।

(2) प्राणियों को ऊर्जा कहाँ से प्राप्त होती हैं ?

प्राणियों को प्रकृति के विभिन्न स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त होती है।

(3) ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत क्या हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत प्रकृति के वे पदार्थ हैं जिनसे ऊर्जा मिलती हैं— जैसे लकड़ी, कोयला, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, वायु, जल आदि।

(4) ऊर्जा के गैर-पारंपरिक स्रोतों की खोज क्यों की जा रही है ?

पारंपरिक स्रोत के भंडारों में कमी होती जा रही है। इसलिए गैर-पारंपरिक स्रोतों की खोज की जा रही है।

(5) सौर ऊर्जा की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

आज सौर ऊर्जा का अनेक प्रकार से उपयोग किया जा रहा है। उससे बिजली पैदा की जाती है। सोलर-कुकर, दाल-चावल, माँस-मछली आदि पकाने के काम आता है। अस्पताल, होटल आदि में पानी गरम करने के लिए

सोलर-हीटर का उपयोग किया जाता है। सोलर-ड्रायर की सहायता से अनाज, इमारती लकड़ी आदि को सुखाया जाता है। समुद्र-जल के खारेपन को दूर करने के लिए भी सौर संयंत्रों का विकास किया जा रहा है।

(6) पारंपरिक ऊर्जा से सौर ऊर्जा क्यों अधिक उपयोगी है ?

पारंपरिक ऊर्जा से सौर ऊर्जा इसलिए अधिक उपयोगी हैं क्योंकि यह हमारे देश में बारहों महीने सुलभ है। साथ ही इससे पेट्रोल, डीजल आदि ऊर्जा के पारंपरिक साधनों के लिए विदेशों का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा। यही नहीं, विदेशी मुद्रा में भी इससे बचत हो सकेगी।

യൂണിറ്റ്—2

6.0 സംക്ഷേപണത്തെക്കുറിച്ച്

സംക്ഷേപണം പരിശീലിക്കുന്നതുകൊണ്ട് ആശയങ്ങൾ ചുരുക്കി എഴുതാനുള്ള കഴിവുണ്ടാകുന്നു. ഒരു പാഠഭാഗത്തിൻെറ സാരാംശം എഴുതുന്നതുപോലെയാണിത്. താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന നിർദ്ദേശങ്ങൾ ശ്രദ്ധിക്കുക.

(1) സംക്ഷേപണം തയ്യാറാക്കുമ്പോൾ മൂലഖണ്ഡികയുടെ മൂന്നിലൊന്നിൽ കവിയാൻ പാടില്ല.

(2) സംക്ഷേപണത്തിൽ മൂല ഖണ്ഡികയിലെ പ്രധാന ആശയങ്ങൾ വിട്ടു പോകരുത്. മൂല ഖണ്ഡികയിലുള്ള പദങ്ങളും പദസംഹിതകളും കഴിയുന്നത്ര ഒഴിവാക്കുക

(3) സംക്ഷേപണത്തിൽ മൂല ഖണ്ഡികയിൽ ഇല്ലാത്ത ആശയം കടന്നുകൂടരുത്.

6.1 തന്നിരിക്കുന്ന ഖണ്ഡിക ഒന്നു രണ്ടു പ്രാവശ്യം നന്നായി വായിക്കുക. പ്രധാന ആശയങ്ങൾ ഒരു പ്രത്യേക കടലാസ്സിൽ കുറിക്കുക. ഈ പ്രധാന ആശയങ്ങളെ വികസിപ്പിച്ച് സംക്ഷേപണം തയ്യാറാക്കുക. ഉചിതമായ ഒരു ശീർഷകം കൊടുക്കുക.

6.3 സംക്ഷേപണത്തിന് ഇവിടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന ഖണ്ഡിക അതിലുള്ള ചില പുതിയ പദസംഹിതകളും/പദങ്ങളും നിമിത്തം അല്പം ബുദ്ധിമുട്ടുള്ളതായിതോന്നാം പാഠത്തിൽ വിഷമമുള്ള പദസംഹിതകളുടെയും പദങ്ങളുടെയും സന്ദർഭോചിതമായ അർത്ഥവും നൽകിയിട്ടുണ്ട്. അവയുടെ സഹായത്തോടെ ഖണ്ഡികയിലുള്ള ആശയങ്ങൾ പൂർണ്ണമായും മനസ്സിലാക്കാൻ ശ്രമിക്കണം.

7.0 സംക്ഷേപണം-ഖണ്ഡിക—1

7.1 താഴെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന ഖണ്ഡിക വായിച്ച് മൂന്നിലൊന്നായി സംഗ്രഹിച്ചെഴുതുക

इस दुनिया में यही होता आया है कि सच बोलनेवाला और इंसाफ की माँग करने वाला मारा जाता है। आज से हजारों साल पहले यूनान में एक दार्शनिक[1] हुआ था। उसका नाम सुकरात[2] था। उस की बातें सीधी, सच्ची होती थीं। कुछ धर्मांध लोग[3] उसकी बातें सह न पाते थे। इसके लिए उसको कानून के आदेश से जहर पीना पड़ा था। ईसा को अपने समय के सामाजिक और धार्मिक अनाचारों[4] के विरुद्ध आवाज़ उठाने के कारण सूली[5] पर चढ़ना पड़ा था। सांप्रदायिकता[6] को शांत करने और हिंदु, मुसलिम, सिख, ईसाई आदि सभी जातियों के लोगों में भाईचारा और आपसी प्रेम[7] फैलाने के लिए गांधीजी को अपनी जान गँवानी पड़ी[8] थी। अमेरिका में वहाँ के काले लोगों को उनके रंग और जाति के कारण होने वाले दुर्व्यवहारों[9] से बचाने और उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए मार्टिन लूथर किंग ने अहिंसात्मक[10] आंदोलन[11] चलाया था। लेकिन लूथर किंग के अहिंसात्मक आंदलोन का कोई फल न हुआ और उनकी भी हत्या कर दी गई। आज संसार के सामने वही पुराना प्रश्न फिर खड़ा है कि क्या दुनिया से सच बात कहने वाले और इंसाफ[12] की माँग करने वालों का इसी प्रकार अंत होता रहेगा?'' जरा सोचिए, यदि इस प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में है तो मनुष्य जाति का भविष्य कितना निराशापूर्ण होगा? लेकिन इससे यह भी न समझा जाए कि सच बात कहने वाले और न्याय माँगने वाले पैदा नहीं होंगे, होंगे और जरूर होंगे।

---

[1]തത്വജ്ഞാനി, ചിന്തകൻ [2]സോക്രട്ടീസ് [3]മതാന്ധസമുദായം [4]അനാചാരങ്ങൾ

[5]കുരിശ് [6]വർഗ്ഗീയത [7]പരസ്പര സ്നേഹം [8]ത്യജിക്കുക [9]ദുഷ്പെരുമാറ്റം

[10]അക്രമരഹിതമായ, സമാധാനപൂർണ്ണമായ [11]സമരം [12]നീതി

7.2 പാഠം

संसार और उसके सुधारक

दुनिया में हम यही देखते आए हैं कि सत्यवादियों तथा न्याय की माँग करने वालों को कष्ट उठाना पड़ता है। यहाँ तक कि अपनी जान भी गँवानी पड़ती है। सुकरात, ईसा मसीह, महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग इसके उदाहरण हैं। इन सबको सच्चाई, न्याय, प्रेम और अहिंसा की राह पर चलने के कारण भी अपने प्राण देने पड़े। किंतु यह भी सच है कि सत्य और न्याय की बात कहने वाले लोग हमेशा पैदा होते रहेंगे।

8.0 സംക്ഷേപണം ഖണ്ഡിക—2

पर्यटकों[1] के लिए भारत पृथ्वी का स्वर्ग है। भारत जैसी प्राकृतिक और भौगोलिक विविधता अन्य देशों में दुर्लभ है। इस देश के कई भाग ऐसे हैं जहाँ बहुत गर्मी पड़ती है और कुछ भाग ऐसे हैं जो बर्फ़ से ढके रहते हैं।

दूर-दूर तक फैली हुई भारत की पर्वतश्रेणियाँ[2] अपनी सुंदरता में निराली[3] हैं। इस देश में नदियों, झीलों और सरोवरों की सुंदरता देखते ही बनती है। इसके अतिरिक्त भारत का समुद्र तट बहुत विशाल और सुंदर है, यहाँ के अनेक स्थानों में सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। उदाहरण के लिए दार्जिलिंग, जगन्नाथपुरी आदि में सूर्योदय और द्वारका, माउँट आबू आदि का सूर्यास्त पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षक होता है। कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों ही दर्शनीय हैं।

पर्यटकों के लिए हमारे देश में बहुत से आकर्षण[4] हैं। कश्मीर तथा गोवा अपनी प्राकृतिक छटा[5] और सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटकों का कहना है कि कश्मीर की घाटी जैसा सुंदर स्थान संसार में और कहीं नहीं है। बर्फ़ीले पहाड़ों से घिरी इस घाटी के उत्तर में हिमालय की विशाल पर्वतमाला है। कश्मीर की दर्पण[6] जैसी झीलें, चारों ओर फैली हरियाली, फूलों से लदी धरती, खुशबू से भरा वातावरण[7] और कहीं नहीं मिलेगा।

---

1. വിനോദയാത്രക്കാർ 2. പർവ്വതനിരകൾ 3. വിചിത്രമായ 4. ആകർഷണങ്ങൾ 5. പ്രകൃതി സൗന്ദര്യം 6. കണ്ണാടി 7. അന്തരീക്ഷം

2—74 CH Dte/2013

जबलपुर, के पास नर्मदा नदी के किनारे भेड़ा घाट पर संगमरमर की पहाड़ियाँ तथा धुआँधार जलप्रपात[1] भी देखने के योग्य हैं।

ऐतिहासिक स्थलों में आगरा का विश्वप्रसिद्ध[2] ताजमहल, दिल्ली में लालकिला, कुतुबमीनार और अशोक की लाट[3] देखने योग्य हैं। दक्षिण भारत में विजयनगर तथा गोलकुंडा के किले भी देखने योग्य हैं। महाराष्ट्र में अजंता और एलोरा की गुफ़ाओं के भित्ति-चित्र[4] अद्वितीय हैं।

भारत में वन्य जीवन के प्रेमियों के लिए भी बहुत-से सुंदर अभयारण्य[5] हैं जिनमें अनेक प्रकार के वन्य पशु-पक्षियों को उनके प्राकृतिक वातावरण में देखा जा सकता है। गिर के जंगलों के सिंह, बंगाल के बाघ और असम तथा मैसूर के हाथी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण हैं।

8.1 ഖണ്ഡികയുടെ സംക്ഷേപണം

पर्यटकों का स्वर्ग : भारत

भारत एक विशाल देश है। पर्यटकों के लिए यहाँ अनेक आकर्षण हैं। इस देश के पहाड़, नदियाँ, झीलें और समुद्रतट, पर्यटकों के लिए बहुत ही मनोहारी हैं। भारत के अनेक स्थलों पर सूर्योदय और सूर्यास्त दर्शनीय हैं। कश्मीर, गोवा और कन्याकुमारी की अपनी-अपनी सुंदर छटाएँ हैं। इस देश में अनेक दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल हैं। यहाँ के वन्य पशु-पक्षी भी पर्यटकों के लिए एक विशेष आकर्षण रखते हैं।

1.വെള്ളച്ചാട്ടങ്ങൾ 2. ലോകപ്രസിദ്ധമായ 3. അശോകസ്തംഭം 4. ചുമർചിത്രങ്ങൾ
5. വന്യമൃഗ സംരക്ഷണ കേന്ദ്രം

पाठ / പാഠം } 20

ഉള്ളടക്കം

1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

യൂണിറ്റ്—1

2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

3.0 പാഠം—हमारा पर्यावरण

4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

5.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

യൂണിറ്റ് —2

6.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

7.0 പാഠം रीढ़ की हड्डी ഏകാങ്ക നാടകം

8.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

9.0 പാഠത്തിൻെറ സംഗ്രഹം

1.0 പാഠഭാഗത്തെക്കുറിച്ച്

ഈ പാഠത്തിൽ രണ്ട് വ്യത്യസ്തമായ വിഷയങ്ങൾ ഉൾപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു. പരിസ്ഥിതി സംരക്ഷണത്തിൻെറ പ്രാധാന്യത്തേയും ആവശ്യകതയേയുംപ്രതിപാദിക്കുന്നതാണ് ഒന്നാമത്തെ ലേഖനം. ഇതിൽ വെടിപ്പും ശുചിത്വവുമുള്ള പരിസ്ഥിതി നമ്മുടെ ജീവിതത്തെ എത്രമാത്രം ഉത്സാഹ പൂർണ്ണമാക്കുന്നു എന്നു കാണിക്കുന്നു. രണ്ടാമത്തെ പാഠം रीढ़ की हड्डी എന്ന ഏകാങ്ക നാടകമാകുന്നു തൻെറ മകൾക്ക് സ്ത്രീധനം ഒരുക്കാൻ വിഷമിക്കുന്ന ഒരു പിതാവിൻെറ പ്രയാസങ്ങളും പ്രശ്നങ്ങളും ഇതിൽ വർണ്ണിക്കുന്നു. ഹിന്ദുക്കൾക്കിടയിൽ നിലവിലിരിക്കുന്ന സ്ത്രീധന സമ്പ്രദായത്തിൻെറ രൂക്ഷത തുറന്നു കാണിക്കുന്ന ഏകാങ്ക നാടകമാണിത്.

യൂണിറ്റ് —1

2.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

പരിസ്ഥിതി സംരക്ഷണം എന്താണെന്നും പരിസ്ഥിതിയെ വൃത്തിയും വെടിപ്പും ഉള്ളതാക്കാൻ സാധിക്കുമെന്നും ഈ പാഠത്തിൽ വിശദമായി പ്രദിപാദിച്ചിരിക്കുന്നു. വായുവും ജലവും വൃക്ഷലതാദികളും പർവ്വതനിരകളും നദികളും നിറഞ്ഞ പ്രകൃതി ഈ ഭൂമിയിൽ നമ്മെ ജീവിക്കാൻ യോഗ്യമാക്കിത്തീർക്കുന്നു. നമ്മുടെ പരിസരമലിനീകരണ പ്രവണതയും വിവേചനരഹിതമായ വനനശീകരണവും മനുഷ്യ ജീവിതത്തിനു അപകടമുണ്ടാകാത്തക്കവിധം പരിസ്ഥിതിയുടെ സമതുലിതാവസ്ഥ നശിപ്പിച്ചിരിക്കുന്നു. പരിസരമലിനീകരണം തടഞ്ഞ് വീണ്ടും അതിനെ പരിശുദ്ധമാക്കാൻ നമ്മളാൽ കഴിയുന്ന കാര്യങ്ങൾ ചെയ്യണമെന്ന് ഈ ലേഖനം ഉൽബോധിപ്പിക്കുന്നു.

3.0 പാഠം

हमारा पर्यावरण

1. प्रकृति ने मनुष्य, पशु-पक्षियों तथा अन्य जीव जंतुओं को जीवन-यापन के लिए अनेक सुंदर और अमूल्य उपहार दिए हैं। जैसे जलवायु, पहाड़, वन, नदियाँ, समुद्र और झीलें आदि। इनके बिना संसार में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। प्रकृति के ये उपहार ही हमारे पर्यावरण का निर्माण करते हैं। हम प्राय: इस बात पर ध्यान नहीं देते कि प्रकृति का यह पर्यावरण हमारे लिए कितना उपयोगी और आवश्यक है।

2. ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर छाई हुई बर्फ़, अपार वन-संपदा और हरियाली न होती तो हमारा जीवन कितना नीरस और अभाव ग्रस्त हो जाता। पहाड़ों से निकलने वाले झरनों, नालों और नदियों का जल हमारे जीवन का आधार है। पेड़-पौधों से हमें फल-फूल, भोजन और जड़ी-बूटियाँ मिलती है। इस प्रकार पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। अत: हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति सजग रहें।

3. प्रकृति ने पर्यावरण को स्वच्छ तथा प्रदूषण रहित रखने की व्यवस्था भी की है। साथ ही प्रकृति इस पर्यावरण में एक संतुलन भी बनाए रखती है। उदाहरण के लिए मनुष्य

द्वारा छोड़ी गई कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस को पेड़-पौधे जीवनदायिनी ऑक्सीजन गैस में बदल देते हैं। इसी प्रकार अनेक पशु-पक्षी एवं कीड़े-मकोड़े भी हानिकारक तत्वों को विनाश करके पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाते रहते हैं।

4. आज अधिकतर देशों की जनसंख्या में असाधारण वृद्धि हो रही है। साथ ही शहरीकरण और औद्योगीकरण भी तेजी से हो रहा है। इनके फलस्वरूप हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन प्रदूषित होता जा रहा है। आज स्थिति इतनी भयंकर हो चुकी है कि हमें साँस लेने के लिए शुद्ध वायु और पीने के लिए शुद्ध जल नहीं मिलता। जिस गंगा का हमारे देश में इतना महत्व है, वह भी आज बढ़ते हुए शहरों और उद्योगों की गंदगी के कारण अत्यंत प्रदूषित हो चुकी है। फिर अन्य नदियों का तो कहना ही क्या?

5. वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से वन-संपदा तो नष्ट हो ही रही है साथ ही वर्षा की भी कमी होती जा रही है। औद्योगीकरण ने वायुमंडल को भयंकर रूप से प्रदूषित कर दिया है। बढ़ते हुए कारखानों का धुआँ और विषैली गैसें मनुष्य के लिए कितनी घातक हो सकती हैं, इसका अनुमान भोपाल गैस त्रासदी से लगाया जा सकता है। दूषित पर्यावरण के कारण अनेक जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की प्रजातियाँ नष्ट होती जा रही हैं। इससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

6. यह ठीक है कि आज विज्ञान का युग है। हमें कल-कारखाने चाहिए, परिवहन के विविध साधन भी चाहिए, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने पर्यावरण की उपेक्षा करें। सच बात तो यह है कि वैज्ञानिक प्रगति और पर्यावरण की सुरक्षा में कोई विरोध नहीं, बल्कि विज्ञान का उपयोग पर्यावरण की सुरक्षा के लिए किया जाना चाहिए।

7. हमारा कर्तव्य है कि हम समाज में पर्यावरण के प्रति सजगता उत्पन्न करें। इसके लिए सरकार ने भी पर्यावरण विभाग की स्थापना की है। गंगा प्राधिकरण, सामाजिक वानिकी तथा वन-महोत्सव आदि ऐसी ही परियोजनाएँ हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण की सुरक्षा की व्यापक योजनाएँ बनाई गई हैं। इसलिए 5 जून को सभी देशों में पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। हमें चाहिए कि व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर अपने पर्यावरण को प्रदूषित न होने दें और उसे सुंदर और स्वच्छ बनाने का प्रयत्न करें।

4.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

ഖണ്ഡിക—1

पर्यावरण	പരിസ്ഥിതി
अमूल्य	അമൂല്യമായ
उपहार	സമ്മാനം
झील	തടാകം
प्राय:	മിക്കവാറും

ഖണ്ഡിക—2

बर्फ़ छा जाना	മഞ്ഞു മൂടുക
अपार	അതിരില്ലാത്ത
वन-संपदा	വനസമ്പത്ത്
हरियाली	പച്ചനിറം
नीरस	നീരസമായ
अभावग्रस्त	ഇല്ലായ്മ
उद्योग	വ്യവസായം
झरना	അരുവി
नाला	തോട്
जड़ी-बूटियाँ	പച്ചമരുന്നുകൾ
सुरक्षा	സംരക്ഷണം
सजग रहना	ജാഗ്രത പാലിക്കുക
कच्चा माल	അസംസ്കൃതവസ്തുക്കൾ

ഖണ്ഡിക—3

स्वच्छ	നിർമലമായ
कीड़े-मकोड़े	കൃമികീടങ്ങൾ
व्यवस्था	വ്യവസ്ഥ
संतुलन	സന്തുലിതാവസ്ഥ
जीवनदायिनी	ജീവിതം പ്രദാനം ചെയ്യുന്ന
प्रदूषण रहित	മലിനീകരണമില്ലാത്ത
हानिकारक तत्व	വിനാശകരമായ ഘടകങ്ങൾ
विनाश करना	നശിപ്പിക്കുക

ഖണ്ഡിക—4

शहरीकरण	നഗരവൽക്കരണം
औद्योगीकरण	വ്യാവസായീകരണം
साँस लेना	ശ്വസിക്കുക
गंदगी	മാലിന്യം

ഖണ്ഡിക—5

अंधाधुंध	വിവേചനമില്ലാതെ
वृक्षों की कटाई	മരം വെട്ടൽ
वायुमंडल	വായുമണ്ഡലം
धुआँ	പുക
विषैली गैसें	വിഷവായു
त्रासदी	അത്യാഹിതം
दूषित	ദുഷിച്ച
प्रजाति	ഇനം
संतुलन बिगड़ना	സമതുലിതാവസ്ഥ നഷ്ടപ്പെടുക

ഖണ്ഡിക—6

कल	യന്ത്രം
परिवहन	ഗതാഗതം
प्रगति	പുരോഗതി

5.0 ചോദ്യോത്തരങ്ങൾ

(1) पेड़-पौधे पर्यावरण को किस प्रकार स्वच्छ बनाते हैं ?

पेड़-पौधे कार्बन-डाई आक्साइड लेते हैं और हम आक्सीजन लेते हैं। इस तरह वायु में मिली हुई जहरीली गैस को लेकर शुद्ध प्राणवायु देते हैं। उनका यह काम हमारे पर्यावरण को शुद्ध तथा स्वच्छ बनाता है।

(2) पेड़-पौधों के अभाव से जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

पेड़-पौधों के अभाव से जलवायु गरम हो जाती है। वर्षा कम होने लगती है।

(3) आज हमारे पर्यावरण को औद्योगिक युग कैसे प्रदूषित कर रहा है ?

औद्योगिक युग होने के कारण आज चारों ओर कारखानें और मिलों की संख्या बढ़ रही है, सड़कों पर गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। इन सबके धुएँ से हमारा पर्यावरण दूषित हो रहा है। कारखानों के गंदे पानी से नदियों का जल भी प्रदूषित हो रहा है।

യൂണിറ്റ് —2

6.0 പാഠത്തെക്കുറിച്ച്

ഈ ഏകാങ്ക നാടകം ആധുനിക ഹിന്ദി സാഹിത്യത്തിലെ പ്രസിദ്ധ നാടക കൃത്തുക്കളിൽ ഒരാളായ ജഗ്ദീശ് ചന്ദ്ര് മാഥുർ രചിച്ചിട്ടുള്ളതാണ്. തൻെറ മകൾക്ക് സ്ത്രീധനം ഒരുക്കാൻ വിഷമിക്കുന്ന ഒരു പിതാവിൻെറ വിവിധ തരത്തിലുള്ള വിഷമതകളും ദുരിതാനുഭവങ്ങളുമാണ് ഈ നാടകത്തിൽ ചിത്രീകരിച്ചിരിക്കുന്നത്. ഈ ചടങ്ങു നിമിത്തം പെൺകുട്ടിക്ക് അപമാനകരമായ പല കീഴ്വഴക്കങ്ങളെ അനുസരിക്കേണ്ടിവരുന്നു. ഏകാങ്കത്തിലെ നായികയായ ഉമ ഈ കീഴ്വഴക്കങ്ങളെ എതിർക്കുകയും പെൺകുട്ടികൾ കന്നുകാലികളെപ്പോലുള്ള വില്പനചരക്കല്ലെന്നു പരപക്ഷക്കാരോടും കാണികളോടുമായി ഉറക്കെ പ്രഖ്യാപിക്കുകയും ചെയ്യുന്നു. അവൾക്ക് തനതായ ഒരു വ്യക്തിത്വമുണ്ടെന്നു വീണ്ടുംപ്രസ്താവിക്കുന്നു. പാവം ഉമ ഈ ആചാരങ്ങളെ എതിർക്കുന്നുണ്ടെങ്കിലും ഇവയെ എതിർക്കാൻ അശക്തരായ തൻെറ രക്ഷകർത്താക്കളുടെ ദയനീയ സ്ഥിതി മനസ്സിലാക്കുന്നു.

7.0

रीढ़ की हड्डी

पात्र परिचय	उमा	—	लड़की
	रामस्वरूप	—	लड़की का पिता
	प्रेमा	—	लड़की की माँ
	शंकर	—	लड़का
	गोपाल	—	लड़के का बाप
	रतन	—	रामस्वरूप का नौकर

1. (मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा)। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आती है, वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा उनके नौकर ने पकड़ रखा है)

रामस्वरूप : अबे, धीरे-धीरे चल।—अब तख्त को उधर मोड़ दे-उधर।—बस,बस।

(तख्त के रखे जाने की आवाज आती है)

नौकर : बिछा दूँ साहब ?

रामस्वरूप : (जरा तेज़ आवाज़ में) और क्या करेगा ? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो देर से पहुँचा था क्या ?—बिछा दूँ साब ?—और यह पसीना किसलिए बहाया है ?

नौकर : (तख्त बिछाता है) ही-ही-ही।

रामस्वरूप : हँसता क्यों है—अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की है। यह तख्त क्या चीज़ है ?—उसे सीधा कर—यों-यों-हाँ, बस। और सुन, बहुजी से दरी माँग ला, उसके ऊपर बिछाने के लिए-चद्दर भी, कल जो धोबी के यहाँ से आई है, वही।

2. (नौकर जाता है। बाबू साहब, इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते साफ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो-चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा का आना। गंदुमी रंग, छोटा कद। चेहरे और आवाज़ से जाहिर होता है किसी काम में बहुत व्यस्त है। उसके पीछे-पीछे नौकर आ रहा है—खाली हाथ। बाबू रामस्वरूप दोनों की तरफ़ देखने लगते हैं।)

प्रेमा : मैं कहती हूँ, तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरूरत पड़ गई। एक वैसे भी जल्दी-जल्दी में—

रामस्वरूप : धोती ?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो और फिर न जाने किसलिए—

रामस्वरूप : लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने ?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन।

रामस्वरूप : क्यों बे रतन, तेरे कान में डाट लगी है ? मैंने कहा था—धोबी के यहाँ से जो चद्दर आई है उसे माँग ला।—अब तेरे लिए दिमाग कहाँ से लाऊँ!

प्रेमा : अच्छा जी, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्से के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न; उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी ?

प्रेमा : दरी तो यहीं रखी है कोने में वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए) और दीदी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला, और सितार भी।—जल्दी जा। (रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

3. प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाड़ली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

3—74 CH Dte/2013

रामस्वरूप : मुँह फुलाए ?—और तुम उसकी माँ किस मर्ज की दवा हो ? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ ? सारे जतन करके हार गई। तुम्हीं ने पढ़ा लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ', 'ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो 'स्त्री सुबोधनी' में ऐसी बातें लिखी हैं—ऐसी बातें कि क्या तुम्हारे बी०ए०, एम०ए० की पढ़ाई में होंगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं।

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न ?

प्रेमा : क्यों ?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे रोक लो और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठिठोली सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही उन लोगों के आने में।

रामस्वरूप : तो हुआ क्या ?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि सारा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है। इसी मारे मैंने तो पौडर-बौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जन्म की नफ़रत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेट लेट गई, मैं तो बाज आई तुम्हारी लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है। वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारोबार चलता है।

प्रेमा : अरे मैंने पहले ही कहा था ईन्ट्रेंस ही पास करा लेते—लड़की अपने हाथ रहती, और उतनी परेशानी उठानी न पड़ती। पर तुम तो—

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप, चुप (दरवाजे में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जबान पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन लोगों के सामने जिक्र और ही ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना। बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : अच्छा तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे। और नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन!—इधर ला, इधर। बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल।—पकड़ तो ज़रा उधर से (चद्दर बिछाते हैं)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीज़ें दी हैं फल रखे ही हैं चाय तैयार है और टोस्ट भी। मगर हाँ मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दुकान दूर है पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे।

प्रेमा : यहाँ का काम कौन ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही, बाजा सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबर वाले कमरे में 'ट्रे' में रखा हुआ है, सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा—दो आदमी ही तो हैं।

5. रामस्वरूप : हाँ, एक बाबू गोपाल प्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि ज़रा करीने से आए। ये लोग जरा ऐसे ही हैं। गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी ख्यालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का ?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर तो लड़का सवा सेर। बी०एस०सी० के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मैडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ मज़बूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और उनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी—

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी) बाबूजी, बाबूजी !

रामस्वरूप : क्या है ?

रतन : कोई आए हैं।

रामस्वरूप : (दरवाजे से बाहर झाँककर, जल्दी मुँह अंदर करते हुए), अरे, ए प्रेमा, वे आ भी गए। (नौकर पर नजर पड़ते ही) और तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ। गया नहीं मक्खन लाने ?—सब चौपट कर दिया—अबे, उधर से नहीं, अंदर के दरवाजे से जा। (नौकर अंदर जाता है)—और तुम जल्दी करो प्रेमा। उमा को समझा देना थोड़ा-सा गा देगी।

(प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ जाती है। उसकी साड़ी जमीन पर रखे बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा : ऊँह। यह बाजा वह नीचे ही रख गया है कंबख्त !

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रख देता हूँ। जल्दी।

(प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक)

6. रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। आइए!-हँ-हँ-हँ।

(बाबू गोपाल प्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक-चतुराई टपकती है। आवाज से मालूम होता है काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज पतली है और खिसियाहट-भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए)-हँ-हँ, इधर तशरीफ लाइए, इधर।

(बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ती है।)

रामस्वरूप : यह बेंत!—लाइए मुझे दीजिए। (कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।) हँ-हँ! मकान ढूँढने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गोपाल प्रसाद : (खँखार कर) नहीं। ताँगेवाला जानता था। और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी—

गोपाल प्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह लीजिए आप तो मुझे तो काँटों में घसीटने लगे हैं। हम तो आपके-हँ-हँ-सेवक ही हैं। हँ-हँ (थोड़ी देर बाद लड़के की तरफ मुखातिब होकर) और कहिए शंकर बाबू कितने दिनों की और छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कालेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक एंड' में चला आया था।

रामस्वरूप : तो·····आपका कोर्स खत्म होने में·····तो अब सालभर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल दो साल।

रामस्वरूप : साल, दो साल?

शंकर : हँ-हँ-हँ!—जी, एकाध साल का 'मार्जिन रखता हूँ।'

7. गोपाल प्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा जमाना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी ही भूख!

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गोपाल प्रसाद : जनाब यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी मलाई आती थी और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह होते हैं स्कूलों में। तब न कोई वालीवाल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस कभी हाकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है।

(शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं)

रामस्वरूप : जी हाँ, उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ-हँ—

गोपाल प्रसाद : (जोशीली आवाज में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई। बारह घंटे! जनाब मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की कि आजकल के एम०ए० भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ। यह तो है ही।

गोपाल प्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!—जी हाँ, वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना। हँ-हँ-हँ- (शंकर भी ही-ही करता है)

8. गोपाल प्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज और तरीका बदलते हुए) अच्छा तो साहब फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजनेस? बिज-(समझकर) ओह!-अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

गोपाल प्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ करते हैं।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ किस बात का। हँ-हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ-हँ! माफ कीजिएगा अभी हाजिर हुआ।

(अंदर जाते हैं)

गोपाल प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज में) आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले लड़की कैसी है!

शंकर : जी—

(कुछ खँखारकर इधर-उधर देखता है)

गोपाल प्रसाद : क्यों क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गोपाल प्रसाद : झुक कर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैक-बोन'—(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की 'ट्रे' लिए हुए। मेज पर रख देते हैं।)

गोपाल प्रसाद : आखिर आप माने नहीं!

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती पसंद है या हिंदुस्तानी?

गोपाल प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो जायका क्या करेगा?

रामस्वरूप : हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।

(प्याला पकड़ते हैं)

9. शंकर : (खँखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वाले पर 'टैक्स' लगाएगी।

गोपाल प्रसाद : (चाय पीते हुए) है। सरकार जो चाहे सो कर ले, पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गोपाल प्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स। (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं)। मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करें। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर छोड़ दिया जाए कि अपनी खूबसूरती के 'स्टेंडर्ड' के माफिक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए, सरकार की कैसी आमदनी बढ़ती है।

रामस्वरूप : (जोर से हँसते हुए) वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपाल प्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं) लीजिए।

गोपाल प्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ मुखातिब होकर) आपका क्या ख्याल है शंकर बाबू ?

शंकर : किस मामले में ?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गोपाल प्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आप से पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पौडर बगैरह लगाए, चाहे वैसे हो। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है।

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गोपाल प्रसाद : देखना क्या। जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी हैं, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ-हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी अहसान है। हँ-हँ।

10. गोपाल प्रसाद : और जायचा (जन्म-पत्र) तो मिल ही गया होगा ?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-व-खुद मिला हुआ समझिए।

गोपाल प्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। (थोड़ी देर रुककर) लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह गलत है न ?

रामस्वरूप : (चौंककर) क्या ?

गोपाल प्रसाद : यही पढ़ाई-लिखाई के बारे में।—जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उनके नखरों को! बस हद से हद मैट्रिक पास होनी चाहिए—क्यों शंकर ?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो सवाल भी नहीं उठता।

4—74 CH Dte/2013

गोपाल प्रसाद : और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी०ए०, एम०ए० तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और पालिटिक्स वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द के दाढ़ी होती है औरत के नहीं।-हँ-हँ-हँ। (शंकर भी हँसता है, मगर गोपाल प्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

11. गोपाल प्रसाद : हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं और ऊँची तालीम भी ऐसी ही चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : (शंकर से) चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद। पी चुका।

रामस्वरूप : (गोपाल प्रसाद से) आप?

गोपाल प्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे। क्या बताएँ, वह मक्खन--।

गोपाल प्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

रामस्वरूप : हँ-हँ। (मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर जरा जोर से) अरे, जरा पान भिजवा देना-सिगरेट मँगवाऊँ?

गोपाल प्रसाद : जी नहीं।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपाल प्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँख छिपा-कर उसे ताक रहे हैं।)

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ- यही, हँ-हँ, आपकी लड़की है। लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रखा हुआ सोने का रिम वाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)

गोपाल प्रसाद : (एक साथ) चश्मा!!!

रामस्वरूप : (जरा सकपका कर) जी, वह तो-वह-पिछले महीने में उसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गोपाल प्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज किया न।

गोपाल प्रसाद : (संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में) बैठो, बेटी।

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा उस तख्त पर, अपने बाजे के पास।

(उमा बैठती है)

12. गोपाल प्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी हैं नहीं चेहरे पर भी छवि है। हाँ, कुछ गाना बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ सितार भी, और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है। यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एकदम रुक जाती है।)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ ? गाने को पूरा करो उमा !

गोपाल प्रसाद : नहीं, नहीं, साहब काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है।

(उमा सितार रखकर अंदर जाने को बढ़ती है।)

गोपाल प्रसाद : अभी ठहरो बेटी !

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो उमा ?

(उमा बैठती है।)

गोपाल प्रसाद : (उमा से) तो तुमने पेटिंग-वेंटिंग भी सीखी है ?

(उमा चुप)

13. रामस्वरूप : हाँ, वह तो आपको बताना भूल ही गया। यह जो तस्वीर टँगी हुई है, कुत्तेवाली, इसी ने खींची है और·····वह उस दीवार पर भी।

गोपाल प्रसाद : हूँ। यह तो बहुत अच्छा है और सिलाई वगैरह ?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक मेरी कमीजें भी। हँ-हँ-हँ।

गोपाल प्रसाद : ठीक है। लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम विनाम भी जीते हैं ? (उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गर्दन झुकाए। गोपाल प्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दे उमा। (गो० प्रसाद से) हँ-हँ, जरा शरमाती है। इनाम तो इसने—

गोपाल प्रसाद : (जरा रूखी आवाज में) जरा मुँह भी तो खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा देखो, आप क्या कह रहे हैं जवाब दो न।

उमा : (हल्की लेकिन मजबूत आवाज में) क्या जवाब दूँ बाबूजी ! जब कुर्सी मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है। वरना·····

रामस्वरूप : (चौंककर खड़े हो जाते हैं) उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए बाबूजी।.....ये जो महाशय मेरे खरीदार बन कर आए हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनको चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भाल कर खरीदते हैं।

गोपाल प्रसाद : (ताव में आकर) बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : (तेज आवाज में) जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और जरा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गए थे।

शंकर : बाबूजी चलिए।

गोपाल प्रसाद : लड़कियों के होस्टल में?—क्या तुम कालेज में पढ़ी हो?

(रामस्वरूप चुप)

14 उमा : जी हाँ, मैं कालेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी०ए० पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँककर कायरता दिखाई हैं। मुझे अपनी इज्जत-अपने मान का ख्याल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा! उमा!

गोपाल प्रसाद : (खड़े होकर गुस्से में) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी०ए० पास है, और आपने मुझे कहा था

5 74 CH Dte/2013

कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए, मेरी छड़ी कहाँ है। मैं चलता हूँ। (छड़ी ढूँढकर उठाते हैं) बी०ए० पास! उफ्फोह! गजब हो जाता। झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ बेटे, चलें।

(दरवाजे की ओर बढ़ते हैं)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर जरा यह पता लगाइएगा कि आपके बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं·····यानी बैकबोन, बैकबोन! (बाबू गोपाल प्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है और फिर सिसकने लगती है। प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।)

प्रेमा : उमा! उमा!·····रो रही है?

(यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है)

रतन : बाबूजी, मक्खन!

(सब रतन की ओर देखते हैं और पर्दा गिरता है।)

8.0 പുതിയ പദങ്ങൾ

ഖണ്ഡിക —1

रीढ़ की हड्डी	നട്ടെല്ല്
मामूली	സാധാരണമായ
सजा हुआ	അലങ്കരിക്കപ്പെട്ട
महाशय	മാന്യൻ
पीठ (സ്ത്രീ)	പുറം (മുതുക്)
नजर आना	കാണപ്പെടുക
तख्त	ഇരിപ്പിടം
सिरा	അറ്റം
बिछा देना	വിരിയ്ക്കുക
अक्ल	ബുദ്ധി
पसीना	വിയർപ്പ്
कलश	കലശം
दरी	വിരിപ്പ്
चद्दर	പുതപ്പ്

ഖണ്ഡിക—2

मेजपोश	മേശവിരി
झाड़न	പൊടിതട്ടുന്ന ഉപകരണം
गुलदस्ता	ഫ്ളവർവൈസ്
गंदुमी	ഗോതമ്പ് നിറം
जाहिर होना	പ്രകടമാവുക
व्यस्त	തിരക്കുള്ള
डाट	കോർക്ക്
माँगना	ആവശ്യപ്പെടുക
कानों में डाट	ചെവികേൾക്കാൻ
लगाना	പാടില്ലാതാവുക

ഖണ്ഡിക—3

लाडली	വാത്സല്യപുത്രി
मुँह फुलाना	മുഖം വീർപ്പിക്കുക
(तुम) किस मर्जी की दवा हो	നിന്നെക്കൊണ്ടെന്തിനു കൊള്ളാം
पकड़ में आना	പിടിയിലാവുക
जतन (यत्न)	പ്രയത്നം
सिर चढ़ाना	തലയിൽ കയറ്റിവയ്ക്കുക (അമിത പ്രാധാന്യം കൊടുക്കുക)
लच्छन (लक्षण)	ലക്ഷണം
अनोखा	വിചിത്രം
ठिठोली	പരിഹാസം
राह पर लाना	നേർവഴിക്കുകൊണ്ടു വരിക
टोमटाम	മേക്ക് അപ്പ്
नफरत (സ്ത്രീ)	വെറുപ്പ്
मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से	നിൻെറ മോളെക്കൊണ്ടു ഞാൻ തോറ്റു
अपने हाथ रहना	നിയന്ത്രണത്തിലാവുക
बाज आना	തോൽക്കുക
जंजाल	വിഷമപ്രശ്നം
जमाना	കാലം
कारोबार	ഏർപ്പാട്

ഖണ്ഡിക—4

झाँकना	എത്തിനോക്കുക
कतई	തീരെ, നിശേഷം
मर्जी	ഇച്ഛ
जिक्र	പരാമർശം
काबू	നിയന്ത്രണം
बाजा	വാദ്യം

ഖണ്ഡിക—5

करीने से	ശരിയായി
दकियानूसी	യാഥാസ്ഥിതികമായ (പഴഞ്ചൻ)
कोरी-कोरी सुनाना	മുഖത്ത ടിച്ചതുപോലെ
ख्याल	വിചാരം
तालीम	വിദ്യാഭ്യാസം
मजबूरी	നിസ്സഹായത
मतलब अपना है	ആവശ്യം എന്റേതാണ്
चौपट कर देना	നശിപ്പിക്കുക
कंबख्त	ഭാഗ്യംകെട്ടവൻ
किवाड़	വാതിൽ
दस्तक (സ്ത്രീ)	മുട്ടിവിളിക്കുക (വാതിലിൽ)

ഖണ്ഡിക—6

लोक चतुराई	ലോകപരിചയം
टपकना	ഇറ്റിവീഴുക
मलना	തിരുമുക
खासियत	പ്രത്യേകത
तशरीफ लाइए	എഴുന്നള്ളുക
बेंत (സ്ത്രീ)	ചൂരൽ
फितरती	ചാതുര്യമുള്ള
खीस निपोरना	പല്ലിളിച്ച് കാണിക്കുക
खिसियाहट	സങ്കോചം
खँखार कर	തൊണ്ട ശുദ്ധി
बड़ी मेहरबानी की	വളരെ ഉപകാരമായി
खास	പ്രത്യേകമായ
परेशानी	ബുദ്ധിമുട്ട്
मुखातिब होना	അഭിമുഖമായി

ഖണ്ഡിക—7

सताना	ഉപദ്രവിക്കുക
दर्जनों	ഡസൻ കണക്കിന്
कचौड़ी	ഒരുതരം ചെറിയ പൂരി
उडा जाना	തീർക്കുക
हजम करना	ദഹിപ്പിക്കുക (ആഹാരം)
मगर किसकी मजाल	ആർക്ക് ധൈര്യം
जोशीला	ഉത്സാഹമുള്ള
फर्राटे	ഒഴുക്കോടെ
मुकाबला करना	നേരിടുക
जब्त करना	അടങ്ങിയിരിക്കുക
रंगीन जमाना	ശോഭനമായ കാലം

ഖണ്ഡിക —8

चौंककर	ഞെട്ടിയിട്
तकल्लुफ	ഔചചാരികത
मेरी तकदीर है	എൻെറ ഭാഗ്യം
हैसियत	നില
वरना	നേരേമറിച്ച്
खँखारना	ചുമച്ചുകണ്ഠ ശുദ്ധിവരുത്തുക
काबिल	യോഗ്യനായ
हाजिर होना	ഹാജരാവുക
दबी आवाज से	പതുങ്ങിയ സ്വരത്തിൽ
ब्याह (विवाह)	വിവാഹം
कमर सीधी करके	നിവർന്നിരിക്കുക
नाम के लिए	പേരിനുവേണ്ടി
जायका	രുചി

ഖണ്ഡിക —9

आमदनी(സ്ത്രീ)	വരവ്
खूबसूरती	സൗന്ദര്യം
मजाक	നേരമ്പോക്ക്
चूँ न करना	ഒരക്ഷരവും ഉരിയാടാതിരിക്കുക
वाकई	യഥാർത്ഥത്തിൽ
बेढब	വികൃതമായ
तश्तरी	പ്ലെയിറ്റ്
निहायत	അത്യന്തം
राजी होना	സമ്മതിക്കുക
रस्म	ആചാരം
के माफिक	അനുസരിച്ച്

ഖണ്ഡിക —10

जन्म-पत्री	ജാതകം
जन्म-पत्री का मिलना	ജാതകപ്പൊരുത്തമുണ്ടാവുക
ठाकुर जी	ഈശ്വരൻ
खुद-व-खुद	തന്നെത്താൻ
भुगतना	അനുഭവിക്കുക
हद से हद	അധികപക്ഷവും, കൂടിവന്നാൽ
बहू	പുത്രവധു
अकल के ठेकेदार	പണ്ഡിതമാന്യന്മാർ
कानों में भनक पड़ना	കേൾക്കാനിടയാവുക
पढ़ाई-लिखाई	വിദ്യാഭ്യാസം
बहस करना	വാദപ്രതിവാദം നടത്തുക

तब तो हो	എന്നാൽ
चुकी गृहस्थी	കുടുംബം നടത്തിയതു തന്നെ
ഖണ്ഡിക—11	
सरका देना	നിരക്കിനീക്കുക
सादगी (സ്ത്രീ)	എളിമ
गर्दन (സ്ത്രീ)	കഴുത്ത്
आँखें गड़ाना आँख छिपाकर ताकना	തുറിച്ചുനോക്കുക ഒളിഞ്ഞുനോക്കുക കണ്ണു വേദനിക്കുക
आँखें दुखना	
सकपकाना	ചൂളിപ്പോവുക
चश्मा	കണ്ണട
ഖണ്ഡിക—12	
चाल (സ്ത്രീ)	ഗതി
छवि	ശോഭ
तल्लीनता	ലയിച്ചിരിക്കുന്ന അവസ്ഥ
मस्तक	നെറ്റി
जाहिर	പ്രകടമായ
झेंपना	ലജ്ജിക്കുക
ഖണ്ഡിക—13	
तस्वीर खींचना	പടം വരയ്ക്കുക

सिलाई	തുന്നൽ
खाँसना	ചുമയ്ക്കുക
अधीर होना	അക്ഷമരാവുക
जिम्मा	ഉത്തരവാദിത്വം
शरमाना	ലജ്ജിക്കുക
इज्जत उतारना	അപമാനിക്കുക
बेइज्जती	അനാദരവ്
कसाई	കശാപ്പുകാരൻ
पाप	പാപം
ताव में आना	ദേഷ്യപ്പെടുക
खरीदार	വാങ്ങിക്കുന്നവൻ
चोट लगना	മുറിവേൽക്കുക
बेबस	വിവശതയുള്ള
साहबजादा	പൊന്നുമോൻ
भागना	ഓടിക്കുക
ഖണ്ഡിക—14	
ताक-झाँक करना	ഒളിഞ്ഞ് എത്തിനോക്കുക
ठिकाना	അതിര്
बेबसी	നിസ്സഹായാവസ്ഥ
कायरता	ഭീരുത്വം
मान	അഭിമാനം
मुँह छिपाना	മുഖംമറയ്ക്കുക

दगा करना	വഞ്ചിക്കുക	तबदील हो जाना	മാറുക
गजब हो जाना	അപകടമുണ്ടായേനേ	घबराहट की हालत	പരിഭ്രമാവസ്ഥ
रुलासापन	കരയുന്നഭാവം	परदा	കർട്ടൻ
सिसकी	തേങ്ങൽ	धम से बैठना	പൊത്തോന്നിരിക്കുക

9.0 സാരാംശം

रीढ़ की हड्डी

उमा एक ग्रेजुएट लड़की है लेकिन उसके पिता रामस्वरूप उसकी शादी बाबू गोपाल प्रसाद के बेटे शंकर से करना चाहते हैं। रामस्वरूप ने गोपाल प्रसाद से यह कहा कि उनकी बेटी केवल मैट्रिक पास है। गोपाल प्रसाद अपने लड़के को साथ लेकर रामस्वरूप के घर लड़की को देखने आते हैं। लड़का शंकर अभी मेडिकल कालेज में पढ़ रहा है और उसकी कमर झुकी हुई है।

उमा की सुंदरता, उसकी पढ़ाई-लिखाई, गाना-बजाना, सिलाई आदि की बातें होने के बाद गोपाल प्रसाद उमा से उसके इनामों के बारे में पूछते हैं तो उमा पहले चुप बैठी रहती है। पर बाद में अपने पिता के बार-बार कहने पर वह गोपाल प्रसाद और शंकर पर बरस पड़ती है। वह पूछती है कि क्या लड़कियाँ भेड़ बकरियाँ हैं जिनको कसाई अच्छी तरह देखभाल कर खरीदे ? लड़के का अपना चरित्र कोई नहीं देखता। वह कह देती है कि शंकर पिछली फरवरी में लड़कियों के होस्टल में पकड़ा गया था और वहाँ उसने नौकरानी के पैरों पर गिरकर अपनी गलती के लिए माफी माँगी थी। भला गोपाल प्रसाद इसे कैसे सह पाते! उन्होंने बात बदल दी और रामस्वरूप को भला बुरा कहते हुए कहा कि उसने झूठ बोलकर यह शादी करनी चाही।

उमा की बातें सुनकर गोपाल प्रसाद और शंकर तो परेशान होकर चले जाते हैं और उमा अपनी बेबसी और अपने माता-पिता की मजबूरी पर रोने लगती है। आखिर वह कैसे इस कुप्रथा से लड़े ?

© C.H.D. Govt. of India	पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग ഡിപ്പാർട്ട്മെൻറ് ഓഫ് കറസ്പോണ്ടൻസ് കോഴ്സ് केंद्रीय हिंदी निदेशालय സെൻട്രൽ ഹിന്ദി ഡയറക്ടറേറ്റ്	मलयालम माध्यम डिप्लोमा कोर्स

ഹിന്ദി ഡിപ്ളോമ കോഴ്സ്

उत्तर पत्र / ഉത്തരക്കടലാസ് -19

उ.प. / R.S. 19&20

വിദ്യാർത്ഥിക്ക് ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി ..... प्राप्तांक
ഡയറക്ടറേറ്റിൽ ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി ..... മാർക്ക് } --------/20

ഉത്തരക്കടലാസ് അയയ്ക്കേണ്ട വിലാസം	മേൽവിലാസം : (ഇംഗ്ലീഷിൽ)
The Asstt. Education Officer (Malayalam) Department of Correspondence Courses, Central Hindi Directorate, West Block-VII, R.K. Puram, New Delhi - 110066 (INDIA)	റോൾ നമ്പർ [ ] [ ] പേര് ..... മേൽവിലാസം .... പിൻകോഡ് .....

അഭ്യാസം–1

'सौर ऊर्जा' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'सौर ऊर्जा' പാഠത്തെ ആസ്പദമാക്കി ചുവടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക.

(१) ऊर्जा प्राप्ति के पारंपरिक स्रोत क्या-क्या हैं?

.....

.....

.....

(2) आधुनिक युग में विज्ञान ने ऊर्जा के किन नए स्रोतों को खोज निकाला है?

.....

.....

.....

(3) गैर पारंपरिक स्रोतों के खोज का काम आजकल तेजी से क्यों किया जा रहा है?

.....

.....

.....

(4) ऊर्जा कार्यक्रमों के अंतर्गत क्या-क्या काम किए जा रहे हैं?

.....

.....

.....

(5) भारत को सौर ऊर्जा का पूरा-पूरा लाभ क्यों उठाना चाहिए?

.....

.....

.....

അഭ്യാസം–2

नमूने के आधार पर दिए गए वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाइए।

മാതൃകയനുസരിച്ച് വാക്യങ്ങളെ യോജിപ്പിച്ചെഴുതുക.

മാതൃക : ऊर्जा के बिना जीवन संभव नहीं है।

ऊर्जा के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता।

➡ ऊर्जा के बिना न तो जीवन संभव है न ही कोई कार्य।

(क) मोहन के पास मकान बनाने के लिए जमीन नहीं थी।

उसके पास मकान बनाने के लिए धन नहीं था।

.....

.....

(ख) गाँव में कोई डाक्टर नहीं था।

वहाँ कोई दवाई की दुकान नहीं थी।

.....

.....

(ग) वृक्षों के संरक्षण से सूखा नहीं पड़ेगा।

उनके सरंक्षण से रेगिस्तान नहीं बढ़ेंगे।

.....

.....

അഭ്യാസം–3

अनु, प्र, वि, गैर तथा अन् उपसर्गों की सहायता से निम्नलिखित शब्दों के व्युत्पन्न रूप बनाइए।

अनु, प्र, वि, गैर, अन्-എന്നീ ഉപസർഗ്ഗങ്ങളിൽ യോജിക്കുന്നതു തിരഞ്ഞെടുത്ത് യോജിപ്പിച്ചെഴുതുക.

മാതൃക : गैर + पारंपरिक = गैरपारंपरिक

अनु + उपस्थित = अनुपस्थित

(क) ..... + उपयोग = ...

(ख) ..... + कानूनी = ...

(ग) ..... + शिक्षण = ...

(घ) ..... + देशी = ...

(ङ) ..... + संधान = ...

അഭ്യാസം–4

सौर ऊर्जा की उपयोगिता पर लगभग १५० शब्दों में एक लेख लिखिए।

സൗരോർജ്ജത്തിൻെറ ഉപേയാഗത്തെക്കുറിച്ച് ഏകദേശം 150 വാക്കുകളിൽ ഒരു ലേഖനമെഴുതുക.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

അഭ്യാസം–5

नीचे लिखे गद्यांश का सार लिखिए।

ചുവടെയുള്ള ഖണ്ഡികയുടെ സാരാംശം എഴുതുക.

रास्ते में मुझे मालूम हुआ कि जब तक जहाज नहर में से गुजरता है तब तक टामस कुक कंपनी की ओर से ऐसा प्रबंध है कि यदि कोई मुसाफिर चाहे तो मोटर द्वारा जाकर काहिरा नगर और उससे थोड़ी ही दूर पर स्फिंक्स देख कर आ सकता है। मैंने यह देख लेना अच्छा समझा। मेरे ही जैसे कुछ और मुसाफिर भी थे जिन्होंने टामस कुक के साथ वहाँ जाने का प्रबंध कर लिया। हम लोग बहुत सवेरे ही करीब पाँच बजे जहाज से उतरकर मोटर पर काहिरा चले गये। काहिरा पहुँचने पर मुँह हाथ धोने और कुछ हल्का नाश्ता कर लेने के लिए हमें एक होटल में ले जाया गया। उसके बाद हम काहिरा अजायबघर देखने गए। वहाँ पिरामिडों से खुदाई में निकली हुई चीजें सुरक्षित रखी हुई हैं। यह बड़ा सुंदर संग्रह है। प्राचीन मिश्र के कितने ही नामी और प्रतापी बादशाहों के शव (ममी) जो पिरमिडों से निकले हैं वहाँ सुरक्षित हैं। अब देखने में वह काले पड़ गए हैं। पर मनुष्यों के चेहरे और हाथ पैर तो ज्यों के त्यों हैं। वे जिस महीन कपड़े में लपेट कर गाड़े गए थे वह कपड़ा भी अभी तक वैसे ही लिपटा हुआ है। यह कपड़ा बहुत ही बारीक है।

कहा जाता है कि यह कपड़ा भारत से ही जाया करता था।

അദ്ധ്യാപകൻെറ അഭിപ്രായങ്ങളും നിർദ്ദേശങ്ങളും.

1. ചുവടെ പറയുന്ന കാര്യങ്ങൾ പ്രത്യേകം ശ്രദ്ധിക്കുക.

    1. അക്ഷരങ്ങൾ .....

    2. പദങ്ങൾ .....

    3. വ്യാകരണം .....

    4. വാക്യരചന .....

2. വിലയിരുത്തൽ.

उत्तर पत्र
ഉത്തരക്കടലാസ് } – 20

വിദ്യാർത്ഥിക്ക് ഉത്തരക്കടലാസ് കിട്ടിയ തീയതി..... प्राप्तांक मार्क्स } ...../20

അഭ്യാസം–1

'हमारा पर्यावरण' पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'हमारा पर्यावरण' പാഠത്തെ അടിസ്ഥാനമാക്കി ചുവടെ കൊടുത്തിരിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക.

(1) मनुष्य को प्रकृति की ओर से कौन-कौन से अमूल्य उपहार मिले हैं?

.....

.....

.....

.....

(2) प्रकृति पर्यावरण में किस प्रकार संतुलन बनाए रखती है।

.....

.....

.....

.....

(3) पर्यावरण के प्रदूषण से क्या-क्या हानियाँ होती हैं?

.....

.....

.....

.....

(4) पर्यावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सरकार ने क्या किया है?

.....

.....

.....

.....

അഭ്യാസം–2

ईला, ता, ई, इत और प्रत्ययों की सहायता से निम्नलिखित शब्दों के व्युत्पन्न रूप बनाइए।

ईला, ता, ई, इत और इक ഈ പ്രത്യയങ്ങളുടെ സഹായത്തോടെ ചുവടെയുള്ള പദങ്ങൾ യോജിപ്പിച്ചെഴുതുക.

മാതൃക : विज्ञान + इक = वैज्ञानिक

(क) सजग + ... = ...

(ख) विधान + ... = ...

(ग) चमक + ... = ...

(घ) नियम + ... = ...

(ङ) उपयोग + ... = ...

അഭ്യാസം–3

'पर्यावरण की सुरक्षा' पर लगभग 150 शब्दों में एक लेख लिखिए।

'पर्यावरण की सुरक्षा' യെ ക്കുറിച്ച് 150 വാക്കുകളിൽ ഒരു ലേഖനമെഴുതുക.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

അഭ്യാസം–4

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'रीढ़ की हड्डी' ഏകാങ്ക നാടകത്തെ അടിസ്ഥാനമാക്കിയുള്ള ചോദ്യങ്ങൾക്ക് ഉത്തരമെഴുതുക.

(1) रामस्वरूप कमरे की सजावट क्यों कर रहे थे?

.....

.....

(2) उमा की माँ का लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई के बारे में क्या विचार था?

.....

.....

(3) रामस्वरूप की घबड़ाहट का क्या कारण था?

.....

.....

(4) पुराने जमाने के बारे में बाबू गोपाल प्रसाद ने क्या कहा?

.....

.....

.....

(5) उमा को शंकर के बारे में क्या मालूम था?

.....

.....

.....

അഭ്യാസം–5

निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

ചുവടെയുള്ള ശൈലികൾ സ്വന്തം വാക്യത്തിൽ പ്രയോഗിക്കുക.

(1) पसीना बहाना .....

.....

(2) मुँह फुलाना .....

.....

(3) सिर चढ़ाना .....

.....

(4) बाज आना .....

.....

(5) काँटों में घसीटना .....

.....

(6) कोरी-कोरी सुनाना .....

.....

(7) ताव में आना .....

.....

(8) ताक झाँक करना .....

.....

അഭ്യാസം–6

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर उमा का परिचय दीजिए।

'रीढ़ की हड्डी' ഏകാങ്ക നാടകത്തെ അടിസ്ഥാനമാക്കി ഉമ എന്ന കഥാപാത്രത്തെ പരിചയപ്പെടുത്തുക.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

അദ്ധ്യാപകൻെറ അഭിപ്രായങ്ങളും നിർദ്ദേശങ്ങളും :

1. ചുവടെ പറയുന്ന കാര്യങ്ങൾ പ്രത്യേകം ശ്രദ്ധിക്കുക.

   (1) വർണ്ണങ്ങൾ .....

   (2) പദങ്ങൾ .....

   (3) വ്യാകരണം .....

   (4) വാക്യരചന .....

2. വിലയിരുത്തൽ.

410-CHD-2001-SEC-LB

MGIPNLK-410-CHD-2001-2000 Copies-Sec-1A